International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 33-34

सांख्य दर्शन में ईश्वरवाद

डॉ0 निवेदिता राय

प्राचार्य, श्रीराम लच्छन डिग्री कालेज, अमिला–मऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

सांख्य दर्शन की गणना प्रायः निरिश्वरवादी दर्शनों में की जाती है। उपलब्ध सांख्य ग्रन्थों से भी सांख्य दर्शन का स्वरूप निरिश्वरवादी ही सिद्ध होती है।

सांख्य में जगत के उपादान या निमित्त कारण के रूप में ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं की गयी है। इस दर्शन के अनुसार पुरूष और प्रकृति ही दो परम् तत्व हैं और पुरूष की सन्निधि मात्र ही प्रकृति के लिए पर्याप्त है। यद्यपि पुरूष को प्रकृति के सृष्टि कार्य का उपादान या निमित्त नहीं स्वीकार किया गया है तथापि उसकी सन्निधि सृष्टि के लिए परमावश्यक मानी गई है, जिस प्रकार दूध की प्रवृत्ति वत्स वृद्धि के लिए होती है, उसी प्रकार प्रकृति की प्रवृत्ति भी पुरूष के मोगापवर्ग के लिए होती है। मोक्ष प्राप्ति पुरूष–प्रकृति विवेक से ही सम्भव है। अतः उसके लिए भी ईश्वर की आवश्यकता सम्भव नहीं है।

उपनिषद, महाभारत, गीता, मनुस्मृति तथा पुराणों में उल्लिखित सांख्य–सिद्धान्त ईश्वरवादी ही प्रतीत होती। इन ग्रन्थों में ब्रह्म या परमात्मा को सर्वोच्च तथा नित्य बताया गया है और प्रकृति तथा पुरूष को उसके अधीन माना गया है।

मूल शब्दः ईश्वरवाद, निरीश्वरवाद, उपनिषद, महाभारत, गीता, मनुस्मृति, पुराण।

प्रस्तावना

उपनिषद का ईश्वरवादी सांख्य

उपनिषदों में उल्लिखित सांख्य विचारधारा आध्यात्मोन्मुखी ईश्वरवाद है। उसमें ब्रह्म की या ईश्वर की धारणा सर्वोच्च तथा प्रकृति एवं पुरूष को गौण माना गया है। यद्यपि इस प्रकार की विचारधारा उपनिषदों अस्फूट तथा इधर–उधर की बिखरी पड़ी है, तथापि कठ श्वेताश्वतर एव अपेक्षाकृत अर्वाचीन माने जाने वाले मैयायिणि मण्डल ब्राह्मणोपनिषद में स्पष्ट रूप से इस विचारधारा के दर्शन होते हैं, कठोपनिषद में पुरूष का वर्णन परमतत्व के रू॰ में किया गया है। श्वेताश्वर उपनिषद का तो कहना ही क्या उसे सांख्य उपनिषद माना जाता है। यह द्वैत का प्रतिपादक है, इसलिए भी इसका सांख्य दर्शन के साथ विशेष सामन्जस्य है। प्रथम अध्याय के नवें मंत्र में सर्वम् अनादि ईश्वर अल्पज्ञ भोक्ता जीव तथा उस भोक्ता जीव के लिए पदार्थों को प्रस्तुत करने वाली प्रकृति का स्पष्ट उल्लेख है।

प्रथम अध्याय के बारहवें मंत्र में स्पष्टतः भोक्ता प्रेरिता शब्द का प्रयोग किया गया है।

श्वेता उ0 1/12

इससे सिद्ध होता है कि जड़ प्रकृति ईश्वर की प्रेरणा को बिना कुछ भी नहीं कर सकती है। अतः प्रेरक के अस्तित्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है।

महाभारत का सांख्य

महाभारत के अनेक प्रकरणों में प्रसंगवश सांख्य का उल्लेख हुआ है। शन्तिपर्व में अनेक प्राचीन सांख्याचार्यों के संबाद का वर्णन किया गया है। इन संवादों में जो दार्शनिक विचार किये गये हैं वे किसी सांख्य ग्रन्थ या परम्परा से लिए गये प्रतीत होते हैं। महाभारत में यह सांख्य का सिद्धान्त ज्यों का त्यों प्रतीत होता है कि प्रकृति सक्रिय जड़ एवं अचेतन है तथा पुरूष चेतन है निष्क्रिय है उदासीन है किन्तु वहॉ पुरूष एवं प्रकृति को दो निरपेक्ष तथा स्वतंत्र तत्व नहीं प्रत्युत ब्रह्म के दो धर्मों के रूप में माना गया है। महाभारत के शान्ति पर्व के मोक्ष–धर्म प्रकरण में आचार्य पंचशील और जनक का संवाद मिलता है, जिसमें आसुरी के द्वारा ब्रह्म के प्रतिपादन की चर्चा आयी है। महाभा0 12.218.14

अन्य प्रसंग में महर्षि यज्ञवल्क्य आदि बताते हैं कि प्रकृति अचेतन है तथा परमतत्व द्वारा अधिष्ठित होकर ही सृष्टि और संहार करती है। महाभा0 12.314.12

इस प्रकार महाभारत सांख्य ईश्वरवादी है

श्रीमद् भागवत गीता का ईश्वरवादी सांख्य

श्रीमद्भागवत गीता में उपलब्ध होने वाला सांख्य भी सेश्वर ही है। यों तो मुख्यतया गीता में भागवत धर्म का ही प्रतिपादन हुआ है। किन्तु वहॉ स्पष्ट रूप से सांख्य विचारधारा का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। गीता में प्रकृति तथा पुरूष को परस्पर पृथक तथा नित्य समझने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। यद्यपि दोनों को परमतत्व पर ही आश्रित माना गया है। वहॉ प्रकृति के अधिष्ठाता या प्रेरक के रूप में ईश्वर का वर्णन किया गया है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहते हैं, समस्त जगत का कारण वे स्वयं अर्थात भगवान हैं तथा उन्हीं की अध्यक्षता में प्रकृति चराचर जगत को उत्पन्न करती है। इस मत का प्रतिपादन और भी स्पष्ट रूप में करते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मेरी महत ब्रह्म रू॰ प्रकृति सम्पूर्ण भूतों की योनि अर्थात गर्भाधान का स्थान है और में उसमें चेतन रूप बीज को स्थापित करने वाला पिता हूँ। जड़ और चेतन के इस संयोग से सृष्टि होती है। इस प्रकार गीता में प्रतिपादित सांख्य भी सेश्वर ही हैं।

''मम योनिर्महद् ब्रह्म तस्मिन्नगर्भ दधान्यहम्।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।।
सर्वयोनिषु मूर्तयः सम्मवन्ति ....महयोनिरहं
बीजप्रदः पित।। गीता 14/3–4

पुराणों का ईश्वरवादी सांख्य

पुराणों में प्रतिपादित सांख्य ईश्वरवादी है, वहीं पुरूष और प्रकृति की तीन सत्ताएं मानी जाती है। प्रकृति तथा पुरूष को ईश्वर पर आश्रित माना जाता है। वुष्णु पुराण के सृष्टि–प्रकरण में काल के

साथ–साथ प्रधान और पुरूष को भी भगवान् विष्णु के विभिन्न रूप बताया गया है। विष्णु पुराण के ये समस्त कार्य आर्थात् प्रपंच प्रलय के होने से लेकर सृष्टि के आरम्भ तक इसी प्रधान से व्याप्त था। उस समय न दिन था न रात थी, न आकाश था न भूमि थी, न अंधकार था, न प्रकाश था। केवल श्रोत्रादि इन्द्रियों और बुद्धि आदि के अविषय प्रधान, ब्रह्म तथा पुरूष ही उस समय थे।

विष्णु पुराण ।।।–2–2311

श्रीधर स्वामी जी कहते हैं कि ''प्राधानिक प्रधानमेव प्राधानिक ब्रह्म पुमांशचेति त्रयमेव तदा प्रलय आसीत्''
अर्थात प्रलयकाल में परमात्मा प्रकृति तथा पुरूष इन दोनों का अस्तित्व था।
नित्य और स्वतंत्र होते हुए भी ये परमात्मा की प्रेरणा के बिना कोई भी कार्य नहीं कर सकते हैं। जगत् की रचना में परमात्मा की प्रेरणा को मुख्य कारण स्वीकार करते हुए कहा गया है कि सर्वात्मा परमेश्वर में स्वयं अपनी ईच्छानुसार परिणामी प्रकृति और अपरिणामी पुरूष में प्रविष्ट होकर उसको सृष्टि कार्य के लिए क्षोभित और प्रेरित किया है।

आचार्य विज्ञान भिक्षु की दृष्टि में ईश्वरवाद

सांख्य दर्शन में ईश्वर की प्रतिष्ठा का प्रयास आचार्य विज्ञान भिक्षु की महत्वपूर्ण देन है। विज्ञान भिक्षु के समय में प्रचलित सांख्य दर्शन का स्वरूप निरीश्वरवादी था, किन्तु उन्हें उपनिषद, महाभारत, गीता तथा पुराणों में प्रतिपादित लुप्त ईश्वरवादी परम्परा का भी ज्ञान था। अतः वे पुनः सांख्य दर्शन में ईश्वर की प्रतिष्ठा स्थापित करने को समुत्सुक थे। उन्होंने सांख्य दार्शनिकों के ईश्वरज्ञान का उल्लेख करते हुए सांख्य को ईश्वर प्रतिषेधांश में दुर्बल बताया है।

निष्कर्ष

वास्तव में सांख्य सिद्धान्त न तो अनीश्वरवादी है और न वेदों को अमान्य करता है, वरन् वह अति प्राचीनकाल से भारतीय समाज में ज्ञान और निष्ठा का प्रचार प्रतिपादित करता आया है। यही कारण है कि गीता में सर्वप्रथम सांख्य योग का ही विवेचन किया गया है और उसके बाद भी जगह–जगह सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। निष्कर्षतः सांख्य दर्शन का स्वरूप निरीश्वरवादी ही सिद्ध होता है, क्योंकि वह प्रकृति और पुरूष से भिन्न स्वतंत्र सृष्टिकर्ता ईश्वर को पृथक सत्ता स्वीकार नहीं किया है। आचार्य विज्ञान भिक्षु भी दो तत्वों में ही ईश्वर की किरण को बिखेरकर सन्तोष करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्वेताश्वर उपनिषद– 1/12
2. महाभारत 12/218/12
3. महाभारत 12/314/12
4. गीता 14/3.4
5. विष्णुनपुराण 111/2/2311